P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VI February-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

अध्यापक शिक्षा में मूल्य शिक्षा एवं चुनौतियाँ : शिक्षक की भूमिका

मेघराज चौधरी
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
ज्ञानदीप शि. प्र. महाविद्यालय,
शिकारगढ़, जोधपुर

सारांश

मूल्यों की शिक्षा अध्यापक में मानसिक, शारीरिक दोनों प्रकार की क्रियाओं को जीवन पर्यन्त तक स्थायी बनाये रखते है, जिससे शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य ज्ञान देना, कौशल का विकास एवं लोगो को जीवन में कार्य करने हेतु योग्य बनाता है। शिक्षक अपने व्यवसाय में पूर्ण ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, समाज में प्रतिष्ठा बनाए रखें और यही गुण अपने शिष्यों में किस प्रकार से हस्तांतरित कर सकता है। यह विचार हमेशा अपने मस्तिष्क में रखना चाहिये, क्योंकि शिक्षकों को छात्रों में शिक्षा के साथ–साथ मूल्य की आधार शिला भी रखनी है।

मुख्य शब्द : मुल्य शिक्षा, शिक्षा की चुनौतिया।

परिचय

प्रत्येक व्यक्ति जिस समाज में रहता है वह नैतिक नियमों, नैतिकता के उद्देश्यों व मूल्यों से जुड़ा रहता है, अतः ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ मूल्य नहीं पाये जाते है। प्रत्येक मूल्य हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। नैतिक मूल्यों एवं नियमों से ही संस्कृति का निर्माण होता है।

मूल्य शिक्षा की सामान्य परिभाषा के अन्तर्गत कहा जा सकता है कि मूल्य हमारे द्वारा अपनाये गये वे आदर्श, विश्वास या प्रतिमान है जिन्हें समाज द्वारा ग्रहण किया जाता है। मूल्य शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम जिस समाज में रहते है उस समाज के प्रत्येक व्यक्ति, माता–पिता, अध्यापक, पड़ौसी एवं बड़ों के साथ आदर्शपूर्ण, एवं आदरतापूर्ण व्यवहार किया जाता है। मूल्य शिक्षा के सामान्य अर्थ से तात्पर्य उन सामाजिक, कलात्मक, नैतिक स्तरों से है जिन्हें व्यक्ति स्वयं एवं दूसरों से पालना कराने हेतु प्रेरणा देता है।

मूल्यों की शिक्षा अध्यापक में मानसिक, शारीरिक दोनों प्रकार की क्रियाओं को जीवन पर्यन्त तक स्थायी बनाये रखते है, जिससे शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य ज्ञान देना, कौशल का विकास एवं लोगों को जीवन में कार्य करने हेतु योग्य बनाता है।

अध्यापक शिक्षा में मूल्य शिक्षा के निम्नबिंदुओं को अपनाया जा सकता है –

1. अध्यापक शिक्षा के अन्तर्गत विधालय सभा में कुछ समय के लिये समूह गान, दो मिनट मौन, महान कृतियों से पाठ वाचन या उचित उद्बोधन किया जाये।
2. इतिहास, भूगोल विषयों में दृश्य–श्रृव्य (Audio-Visual Aid) सामग्री, फोटोग्राफ, फिल्म आदि का उपयोग करके इसमें विभिन्न धर्मो के मूल्यों की जानकारी दी जा सकती है।
3. विद्यालय कार्यक्रम में सप्ताह में दो कालांश नैतिक मूल्यों के हो जिसमे शिक्षक रूचिकर कहानियाँ प्रस्तुत कर जो विभिन्न धर्मो से सम्बन्धित होनी चाहिए।
4. अध्यापक कक्षा में चर्चा करने की आदत को प्रोत्साहित करे जिससे बालकों में नैतिक व धार्मिक मूल्य विकसित हो सके।
5. अध्यापक सृजनशील व रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन करे जिससे छात्र स्वयं का मूल्यांकन करें।
6. शिक्षा के विभिनन स्तरों हेतु ऐसी पुस्तकें तैयार की जाये जो देश भक्ति व सामाजिक सेवा की भावना जागृत कर सकता है।
7. शैक्षिक संचार व सामूहिक विचार विमर्श से नैतिक व धार्मिक मूल्यों को जागृत कर सकते हो।
8. पाठ्यसहगामी क्रियाओं के आयोजन से सतत् मूल्याकंन किया जाये।

वस्तुतः मूल्य सिखाए नहीं जाते वातावरण से अपनाये जाते है। मूल्यों की शिक्षा देने में आदर्श प्रस्तुत करना उत्तम उदाहरण माना गया है। निष्कर्ष के फलस्वरूप शिक्षा के केन्द्र में नैतिक व सामाजिक मूल्यों का विकास होना चाहिए लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में ऐसा दिखाई नहीं देता, अतः हमें समाज में ऐसे भाव प्रस्तुत करने चाहिए जिससे उच्च मानव मूल्यों को शक्तिशाली व मजबूत करने का साधन बन जाये।

मूल्य परख शिक्षा भावो शिक्षकों के प्रति चुनौतियाँ

शिक्षक राष्ट्र निर्माता तो है ही लेकिन साथ ही उसका प्रभाव समाज पर तथा अपने विद्यार्थियों पर अक्षय भी है। शिक्षक का स्वयं का व्यक्तित्व भी मूल्य शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है। शिक्षकों को छात्रों के सामने आदर्श व्यक्तित्व प्रस्तुत करना होगा। उनको मूल्यों के प्रति अपने विश्वास को सुदृढ़ बनाना चाहिए। क्योंकि शिक्षक के व्यक्तित्व एवं आचरण तथा उसके व्यवहार का प्रभाव उनके सम्पर्क में आने वाले छात्र–छात्राओं पर निश्चित रूप में पड़ता है। वस्तुत यह प्रतीत होता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षक मूल्यों को जीवन में उतारने का कोई विशेष प्रयास नहीं करते इसलिए मूल्य सैद्वान्तिक रूप से तो जीति रहते है परन्तु उसका व्यवाहारिक पक्ष शुन्य होता जा रहा है अतः शिक्षक को स्वयं अपने प्रभाव द्वारा मूल्य शिक्षा के लिए छात्रों को प्रेरित करते रहें।

एक शिक्षक को यह ज्ञात होना चाहिए कि स्कूल जाने वाले बच्चों की सीखने की मनोवैज्ञानिक दशा क्या है। उनकी समझने और देखने की स्थिति कैसी है। जिससे वह स्वयं के व्यवहार, सहानूभूतिपूर्ण नजरिये, ध्यान आकर्षित करने वाले निर्देश के तरीके का विकास कर सकें ताकि न केवल छात्र निर्भीक रूप से उसे समझे और अपने मस्तिष्क पटल पर शिक्षक के चरित्र और व्यवहार का स्थायी प्रभाव बना सकें। शिक्षक अपने व्यवसाय में पूर्ण ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, समाज में प्रतिष्ठा बनाए रखें और यही गुण अपने शिष्यों में किस प्रकार से हस्तांतरित कर सकता है। यह विचार हमेशा अपने मस्तिष्क में रखना चाहिये, क्योंकि शिक्षकों को छात्रों में शिक्षा के साथ–साथ मूल्य की आधार शिला भी रखनी है।

कक्षागत चुनौतियां

1. वर्तमान समय में शिक्षा में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, शिक्षण में नियमितता व निष्ठा मौलिकता का सद्भाव आदि मूल्यों का पतन हो रहा है। फलस्वरूप शैक्षिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। भावी शैक्षिक मूल्य एक प्रमुख चुनौती है।
2. आधुनिकता की होड तथा एक दूसरे से आगे बढ़ने व पश्चिमी अन्धानुकरण के कारण बालकों में ईमानदारी, त्याग, करूणा, दया उत्तरदायित्व की भावना नम्रता जैसे नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। भावी शिक्षकों का दायित्व है कि छात्रों में उपरोक्त नैतिक मूल्यों का विकास करें।
3. आधुनिकता तथा भोग विलासिता पूर्ण जीवन शैली के फलस्वरूप छात्रों में सामाजिक दायित्व का निर्वहन, आदर्श नागरिकता, सामाजिक संवदेनशीलता, लोकतंत्र का विकास, मानवतावाद तथा राष्ट्रीय एसता का ह्रास हो रहा है। शिक्षकों का प्रयास यह रहना चाहिए कि छात्रों में सामाजिक व राजनैतिक मूल्यों का विकास करें।
4. वैज्ञानिक आविष्कारों के फलस्वरूप समाज मे कई समाजविरोधी तथा मानव के हित के विपरित काया को बढ़ावा दिया जा रहा है। शिक्षकों का कर्त्तव्य है कि छात्रों में स्वस्थ वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास हेतु प्रयास करें। वैज्ञानिक आविष्कारों को समाजहित के कार्यो के जिए उपयोग करें। छात्रों में वैज्ञानिक मूल्यों का विकास करें।
5. आधुनिक समय में समाज में एकल परिवार की संख्या में वृद्धि हुई है जिससे पारिवारिक मूल्यों का ह्रास हुआ है अतः शिक्षकों का कर्त्तव्य है कि छात्रों में पारिवारिक मूल्यों का विकास करें।
6. वर्तमान समय में समाज मे मानवीय मूल्य समाप्त होते जा रहे है। जिसके पीछे एक प्रमुख कारण शिक्षा का ढांचा भी है। इस प्रकार के शैक्षिक वातावरण को तैयार करने की आवश्यकता है जिसमें विद्यार्थी में मानवीय मूल्यों का विकास हो।

सन्दर्भ सूची

1. एलिस, आर. एस. (1951), एज्युकेशन साइकोलोजी
2. क्रो एण्ड क्रो (1965), एज्युकेशनल साइकोलोजी
3. माथुर एम. के.(1967), एडजेस्टमेन्ट प्रोबलम्स ऑफ एम. एड. डिजर्टेशन
4. अख्तर एस. एस. एंड चौधरी (1967), स्टुडेन्टस इण्डियन सायकोलॉजीकल रिन्यु
5. बुच, एम. बी, (1972–78), सैकण्डरी सर्वे ऑफ रिसर्च इन एज्युकेशन
6. पेरविन, एल. ए. (1980), प्यारी एसेसमेन्ट एंड रिसर्च
7. ढोढियाल एण्ड फाटक (1982), शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र
8. चतुर्वेदी जी (1985), वुमन एडमिनिस्ट्रेटस इन इण्डिया, जयपुर आर. बी. एस. ए. पब्लिशर्स
9. भारतीय आधुनिक शिक्षा (1986), ग्रामीण व शहरी विद्याथियों के मूल्य
10. बैरोन, के. (1988), बैरीयर्स टू प्रोग्रेस को वुमन, न्यू जर्सी, प्रिन्टिस हॉल पब्लिकेशन
11. ज्योतिमित्रा (1997), वुमन एण्ड सोसाइटी, इक्वलिटी एण्ड इम्पापरमेन्ट कनिष्का पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
12. मेनन एल. (1998), वुमन एम्पापरमेन्ट एण्ड चैलेन्ज ऑफ चेन्ज कनिष्का एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
13. गैरिट, हैनरी ई., शिक्षा–मनोवैज्ञानिक में सांख्यिकी के प्रयोग नई दिल्ली कल्याण पब्लिकेशन
14. माथुर एस. एस.शिक्षा–मनोविज्ञान
15. नागर, कैलाशनाथ, सांख्यिकी के मूल तत्व